E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2023; 5(11): 42-48
Received: 23-09-2023
Accepted: 29-10-2023

आसमां खातून
शोध छात्रा, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, उत्तर प्रदेश, भारत

डॉ0 नीलू सिंह
शोध निर्देशिका, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
आसमां खातून
शोध छात्रा, श्री वेंकटेश्वरा विश्वविद्यालय, गजरौला, उत्तर प्रदेश, भारत

पूर्व बाल्यावस्था के बौद्धिक विकास दर पर परिवारिक वातावरण का प्रभाव संभल जनपद के 3 से 6 बर्ष के बालकों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन

आसमां खातून एवं डॉ0 नीलू सिंह

DOI: https://doi.org/10.33545/27068919.2023.v5.i11a.1090

सारांश
बहुत से प्रत्यक्षीकरण ऐसे होते हैं, जिन्हें बालक सरलता तथा सुगमता से सीख लेता है, उदाहरण के लिए, बालक नारंगी की शक्ल, परिणाम, रंग, स्वाद आदि के विषय में आसानी से जानकारी प्राप्त कर लेता है। परन्तु गतिगामी वस्तुओं की चाल आदि के विषय में पर्व व ठीक प्रत्यक्षीकरण बालक के लिए आसान नहीं होते हैं। उनके लिए प्रत्येक वस्तु की एक-दूसरे से ठीक-ठीक दूरी जानना कठिन होता है। इसके विषय में ठीक व पूर्ण प्रत्यक्षीकरण करने के लिए दीर्घकालीन अनुभव की आवश्यकता पड़ती है। समय के साथ उचित शिक्षा भी आवश्यक होती है। अन्यथा इन वस्तुओं के सम्बन्ध में बालक द्वारा दिया गया उत्तर हमें असत्य ही प्रतीत होगा । प्रत्येक बालक का दूरी सम्बन्ध में अनुमान, अपने-अपने अनुभव के होगा, जिसे उसने अपने वातावरण से ही प्राप्त किया है। इस कारण यदि उसे अन्य अनुसार ही परिस्थितियों में रखा जाय तब उसका ज्ञान गलत सिद्ध होगा, क्योंकि वहाँ वह दूरी इत्यादि का अनुमान अपने ही अनुभव के अनुसार करेगा। वर्तमान अध्ययन मे माता पिता द्वारा बच्चो को समय दिया जाता है। 40% बालक, जिसमे प्राथमिक विद्यालय के 60% मदरसा स्कूल के माता पिता एक घण्टा का समय देते है 2 घण्टा व उससे अधिक भी समय देते है लेकिन 2 घण्टे से अधिक समय नही देते । बच्चे स्वयं पढ़ते है बच्चो पर ज्यादा ध्यान नही देते है।

कूटशब्द: बौद्धिक विकास, प्राथमिक विद्यालय, प्रत्यय ज्ञान

प्रस्तावना
बालक में उचित प्रत्यक्षीकरण का निर्माण करने वाले माता-पिता अथवा अध्यापक ही हुआ करते हैं। जब प्रत्यक्षीकरण का उद्गम स्थान संवेदना ही है, तब यह आवश्यक है कि विभिन्न प्रकार के व उचित एवं ठीक अनुभव ही बालकों को प्रदान किये जाने चाहिए, जिससे उनमें उचित व ठीक संवेदना का ही विकास हो सके गलत अनुभव अथवा संवेदना, गलत दृष्टिकोण अथवा प्रत्यक्षीकरण का ही सृजन करेगी।
यदि बालक संसार का ज्ञान प्राप्त करना चाहता है, तब उसके लिए अनुभव द्वारा ज्ञान प्राप्त करने की अत्यन्त आवश्यकता है। इस कार्य में विद्यालय विभन्न प्रकार की योजनाओं द्वारा सहायता पहुंचा सकता है। बालकों को पुरातत्व संग्रहालय, ऐतिहासिक इमारतों तथा आनन्द-भ्रमण इत्यादि को ले जाकर उनकी ज्ञानेन्द्रियों को उचित शिक्षा दी जा सकती है।

बालकों का प्रत्यय ज्ञान

यह शिक्षा का ही कार्य है कि वह बालक में, उनके प्रारम्भिक काल में ही प्रत्येक अनुभवों में वृद्धि करे, जिससे प्रत्यक्षीकरण में वृद्धि के साथ-साथ उनमें स्पष्टता तथा सत्यता भी आए। प्रत्यक्षीकरण द्वारा ही विचारों को प्रोत्साहन मिलता है, इसलिए उसकी शुद्धता परम आवश्यक है। इस प्रकार के उदाहरणों द्वारा बालक पक्षपात एवं पूर्व-धारणाओं से अपनी रक्षा करना सीख लेता है। बालक को समझा देना चाहिए कि एक पतला व्यक्ति मोटे व्यक्ति से अधिक लम्बा दिखाई देता है, जब कि वास्तव में दोनों की लम्बाई बराबर होती है, अतएव यह ऐसे दो व्यक्तियों की लम्बाई के आकलन में त्रुटि न करे। इसी प्रकार वह यह समझ ले कि छोटे कद वाले व्यक्ति को लम्बा प्रतीत होने के लिए ऊँची एड़ी, ऊँचा टोप आदि की आवश्यकता होती है। बालक को इस प्रकार की त्रुटि से भी अवगत करा देना चाहिए कि बड़ी वस्तुओं की छोटी वस्तुओं की अपेक्षा चाल में अन्तर दिखाई पड़ता है उस समय भी जबकि दोनों - की चाल एक समान ही होती है। अतः अध्यापक को चाहिए कि जहाँ विषय विवादास्पद हो, वहाँ उदाहरण देकर बालकों के स्पष्ट प्रत्यक्षीकरण को प्रोत्साहित करे। 'अवधान' एक क्रमशील प्रक्रिया है, जो मस्तिष्क के भण्डार में से किसी एक वस्तु को कभी दूसरी चेतना के केन्द्र में ले जाती है। अवधान की दशाएँ दो मुख्य प्रकार की होती हैं (अ) वस्तुनिष्ठ दशाएँ जो वस्तु की प्रकृति पर अवलम्बित - रहती हैं। अवधान की वस्तुनिष्ठ दशाएँ हैं - (1) तीव्रता, (2) आकार, (3) गति, (4) दोहराना, (5) व्यवस्थित रूप, (6) नवीनता (ब) व्यक्तिगत दशाएँ जो व्यक्ति की रुचियों, इच्छाओं और मानसिक स्थिति पर निर्भर रहती हैं। अवधान की व्यक्तिगत दशाएँ हैं (1) आवश्यकता (2) संवेग, (3) रूचि, (4) स्वभाव, आदत और रुझान ।

जन्म के समय मनोवैज्ञानिक वातावरण

मास्टर्स के अध्ययन से पता चलता है कि 45 में से 38 प्रति पतियों ने अपेन प्रथम शिशु के साथ समायोजन करने में बहुत कठिनाई अनुभव किया। सियर्स मैकोली तथा लेविन के अध्ययन से उन तत्वों का पता चलता है जो गर्भावस्था के प्रति माँ की अभिवृत्ति को व्यक्त करते हैं:

तालिका 1: अपनी गर्भावस्था का ज्ञान होने पर माँ की अभिवृत्ति

1.	अति प्रसन्न इसकी बार देख रही थी	50%
2.	प्रसन्न उत्साह का प्रमाण नहीं	18%
3.	कुछ सीमा तक प्रसन्न	6%
4.	मिश्रित आवृतियाँ लाभ हानि दोनों पर विचार	9%
5.	कुछ-कुछ प्रसन्न	7%
6.	बिल्कुल प्रसन्न	1%
7.	अनिश्चित	100

यदि परिवार में केवल कन्याएँ ही हैं तो माँ को अपनी गर्भावस्था का ज्ञान होने पर प्रसन्नता होगी क्योंकि उसे अब लड़का आने की आशा हो सकती है। यदि पहले लड़के हैं, तो लड़की आने की प्रसन्नता होगी।

प्रारम्भिक अनुभवों का बाद के व्यवहार पर प्रभाव

शिशु को प्रारम्भिक अनुभवों का उसके बाद के व्यवहार पर जो प्रभाव पड़ता हैउसके सम्बन्ध में दो दृष्टिकोण हैंपहला उपचारात्मक कहा जा सकता है। फ्रायड और उनके शिष्य इसका अनुमोदन करते हैं। यह दृष्टिकोण प्रदर्शित है कि शैशवास्या के अनुभवों का प्राथमिक महत्व है। क्योंकि वे सबसे प्रारम्भ में प्रकट होते हैं और शिशु उन सबसे प्रभावित होता है। आधुनिक काल में रिवल ने इस दृष्टिकोण का अधिक प्रचार किया। दूसरा दृष्टिकोण विकासत्मक है। इसके अनुसार कुछ प्रारम्भिक अनुभवों के आधार पर ही शिशु में समायोजन क्षमता, नमनीयता तथा परिवर्तनशीलता आती है। शिशु का स्नायुमण्डल अपरिपक्व होता है। इसलिए विल के अनुसार " उसे माँ की उत्साह की आवश्यकता हैं। इससे उसका स्नायुमण्डल ठीक प्रकार से काम करता है।"

विकासशील बालक पर परिवार का प्रभाव छोटा बालक अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अपने माता-पिता पर निर्भर रहता है जैसे-जैसे बालक बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे उसकी माता-पिता पर निर्भरता कम होती जाती है। अब माता-पिता का नियन्त्रण पहले से कुछ कम कर देना चाहिए। अतः माता-पिता के पूर्व व्यवहारों तथा बाद के व्यवहारों में अन्तर रहेगा।

माता-पिता और बालक-बालिकाओं के व्यवहार में समानता: सेमण्ड ने देखा कि जो माता-पिता बच्चों को प्रेम और सुरक्षा प्रदान करते हैं, उनके माता-पिता ने भी

शैशवावस्था में उन्हें प्रेम और सुरक्षा प्रदान की थी जो माता-पिता तानाशाही रवैया अपनाते हैं, उन्हें भी अपने बाल्यकाल में यही तानाशाही रवी प्राप्त हुआ था रडके का कथन है कि, माता-पिता घर में अनुशासन का वही तरीका अपनाते हैं, जिसका अनुभव उन्होंने अपने बाल्यकाल में किया था। "

माता-पिता के व्यक्तित्व का प्रभाव: माता-पिता के व्यक्तित्व का प्रभाव भी उनके व्यवहार पर पड़ता है। जैसा उनका व्यक्तित्व होगा, वैसा व्यवहार वे अपने बच्चों के साथ करेंगे।

माता-पिता की अभिवृत्तियों का प्रभाव: माता-पिता की अभिवृत्तियों के सम्बन्ध में पूर्व अनुमान नहीं लगाया जा सकता। अनुराधा को दो वर्ष तक के शिशु अच्छे लगते है। वह उन्हें गोद में लेकर पुचकारती है, उछालती है। अमिताभ को तीन-चार वर्ष के बालक अच्छे लगते हैं। उसे उनकी तोतली, मीठी बातचीत में बड़ा रस आता है। वह उनके जिज्ञासा भरे प्रश्नों का बड़े प्रेम से उत्तर देता है। छोटा शिशु जब रोता है, तो अमिताभ कहता है क्या टे-टे लगा रखा है। बालक जब तोतली वाणी में जिज्ञासा प्रकट करता है, तो अनुराधा कहती है क्यों कान खाये जा रहे हो?

माता-पिता के व्यवहार का प्रभाव: सियर्स मैकावी तथा लेविन का कथन है कि बालक और माता-पिता के सम्बन्धों का महत्वपूर्ण घर का स्नेहपूर्ण वातावरण है। सेमण्ड का निष्कर्ष है कि माता-पिता के व्यवहार के प्रमुख तत्व हैं स्वीकृति या –

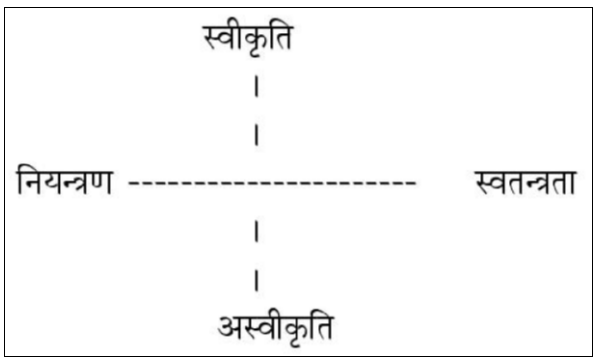

1. माता-पिता बालक बालिकाओं के साथ उनके खलों में भाग लेते हैं। वे उनके साथ वन विहार पर जाते हैं व उनके साथ छुट्टियां बिताते हैं ।
2. वे बालक के योजनाओं तथा आकांक्षाओं में रुचि लेते हैं
3. वे उन्हें सम्मति और प्रोत्साहन देते हैं।
4. बालकों पर विश्वास और प्रोत्साहन देते हैं। 5- बालकों पर विश्वास किया जाता है।
5. वे विद्यालय की प्रगति में रुचि लेते हैं।
6. जन्म से ही वे बालकों से स्नेह करते हैं।
7. जब वे बीमार हो जाते हैं, तो माता-पिता चिन्तित हो जाते हैं।

अस्वीकृति के चिन्ह

1. बालक बालिकाओं में रुचि नहीं ली जाती।
2. उनसे बात-चीत नहीं की जाती है। उनकी उपेक्षा की जाती है।
3. उन्हें झिड़का जाता है।
4. उनका पक्ष नहीं लिया जाता।
5. उन्हें जन्म से ही अवांछित समझा जाता है।

अस्वीकृति के कारण

1. आर्थिक दबाव।
2. माता-पिता के निजत्व पर प्रभाव।
3. प्रसूति तथा पालन-पोषण का तनाव करने में माँ की असमर्थता।
4. माता-पिता की आकांक्षाओं की बालक-बालिका द्वारा पूर्ति न करना।

माता-पिता और बालक के पारस्परिक सम्बन्ध

1. मात-पिता के सम्बन्ध में बालक की अवधारणा ।
2. माता-पिता के साथ साख्य्ययता ।
3. अनुशासन ।

माता-पिता के सम्बन्ध में बालक की अवधारणा

1. बालक अपने आप को अभिव्यक्त करने में असमर्थ होता है। अतः उसके द्वारा दी जाने वाली सूचना विश्वसनीय नहीं कही जा सकती।
2. अपने स्वभावानुसार बालक की अवधारणा का आधार स्कूल होता है। कभी-कभी उसे सूक्ष्म तत्वों का आभास अवश्य होता है।

उदाहरणस्वरूप- पायगेट के अध्ययन में एक बालक ने बताया कि जितना कड़ा दण्ड दिया जायेगा, उतना ही बालकों के लिए अच्छा होगा। लड़के के अध्ययन में ये बातें पाई गई

1. 74 प्रतिशत पूर्व विद्यालय के बालकों ने बताया कि उन्हें बहुत मार पड़ती है, जबकि उनके माता-पिता ने बताया कि कभी-कभी ही उन्हें पीटा जाता है।
2. 83 प्रतिशत बालकों ने बताया कि ऊधम मचाने वाले बालकों की पिटाई अच्छा दण्ड है।

माता-पिता के साथ सारूप्यता: विद्वानों के मतानुसार सारूप्यता से तात्पर्य है कि: वह प्रक्रिया जिनके द्वारा एक व्यक्ति अन्य व्यक्ति के व्यवहार, अभिवृत्तियों और विशेषताओं को अपने भीतर सम्मलित करता है। इसे अनुकरण भी कहा जाता है परन्तु 1 अनुकरण एक सचेतन क्रिया है, जबकि सारूप्यता एक सचेतन क्रिया है। सियर्स का कथन है कि. माता-पिता के व्यवहार आदि का भी लैंगिक सारूप्यता पर प्रभाव पड़ता है रोबान को पता चलता है कि वर्गगत दबाव भी विशेषकर छोटे वर्गों में लैंगिक सारूप्यता में त्वरिता लाते हैं।

अनुशासन परिवार में अनुशासन स्थापित करने में प्रायः निम्न विधियों का प्रयोग: किया जाता है 1 तर्क 2 समझना 3 झिड़कना 4 पीटना 5 धमकाना 6- उपेक्षा करना 7- उसके आत्मगौरव की भावना को प्रेरित करना 8 कठिनाई दूर करना

बिलफोर्ड के अध्ययन से पता चलता है कि ग्यारह क्षेत्रों में माता-पिता को अनुशासन स्थापित करने की आवश्यकता होती पड़ती है। जो कि निम्न हैं 1- भाई-बहनों के सम्बन्ध 2 भोजन 3- नींद 4 बेष-भूषा 5- विभिन्न क्रियाएं 6- विद्यालय

7- स्वास्थ्य 8- अनुपयुक्त व्यवहार 9 वयस्क समायोजन 10- घर 11- समायोजन व्यवहार

शंरक्षकों की अभिवृत्तियाँ

शंरक्षकों व बालक के सम्बन्ध में बहुत कुछ संरक्षकों की अभिवृत्तियों से भी प्रभावित होते हैं। जैसे

1. परिवार का आकार
2. परिवार की अन्तःक्रियात्मक व्यवस्थ
3. परिवार की बनावट
4. माता-पिता की व्यवस्था
5. परिवार का अनुशासन

पारिवारिक वातावरण: बालक के स्वास्थ्य पर घर का प्रभाव पड़ता है। घर पर ही उसका विकास होता है। बदलती सामाजिक मान्यतायें घर को प्रभावित कर रही हैं और बालकों के पोषण पर उनका प्रभाव समस्या के रूप में हो रहा है। घर पर प्रभाव डालने वाले तत्व निम्न हैं।

1. **परिवार का विघटन:** औद्योगिक प्रगति ने परिवार के संगठन को छिन्न-भिन्न 44 कर दिया है। जिन घरों में माता-पिता दोनों ही सर्विस करते हैं, वहाँ बच्चों की स्थिति और भी खराब हो जाती है। इसलिए अलगाव तलाक बढ़ते जा रहे हैं। इस स्थिति का प्रभाव बालकों के मस्तिष्क पर पड़ना स्वाभाविक है।
2. **माता-पिता का व्यवहार:** जिन घरों में माता-पिता का व्यवहार बच्चों के प्रति अच्छा नहीं होता, वहाँ भी बालक असमायोजित हो जाता है। ऐसे परिवारों में बालकों की अवहेलना होती है।
3. **निर्धनता:** निर्धनता को पात्रों तथा विचारों का मूल कहा गया है। भारत में तो 80 प्रतिशत अस्वथता निर्धनता के कारण है। विद्यालयों में एसे बच्चों का अभाव नहीं है, जो वस्त्र तक ठीक से नहीं पहन पाते।
4. **उच्च आदर्श प्रायः** माता-पिता बालकों को वैयक्तिक भिन्नता का विचार किये बिना ही बच्चों के लिए ऊँचे आदर्शों का निर्माण कर लेते हैं। बच्चे जब उन आदर्शों की पूर्ति नहीं कर पाते, तब मानसिक असमायोजन की वृद्धि होती है।
5. **घर:** का अनुशासन घर के अनुशासन का बच्चे के विकास पर गहरा प्रभाव पड़ता है, लेकिन दुर्भाग्यवश हमारे देश में निरक्षरता के कारण अनुशासन का कोई स्तर नहीं है। कहीं पर बच्चों को पूर्ण स्वतन्त्रता है, तो कहीं पर उनकी जरा सी गलती पर सख्त सजा दी जाती है। ऐसे घरों में बच्चों में मानसिक हर तथा चिन्ता बनी रहती है।
6. **परिवार:** में तनाव भारतीय परिवार में केवल माता-पिता और उनके बच्चे ही नहीं होते बल्कि दादा-दादी, चाचा-ताऊ, चाची-ताई अनेक सदस्य होते हैं जिनका बच्चे के साथ विभिन्न बर्ताव होता है। परिवार के तनाव का बच्चे के मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

वातावरण का प्रभाव: वंशानुक्रम से बालक केवल पूर्वजों के गुणों को ही प्राप्त करता है। उन गुणों का समुचित विकास वातावरण द्वारा होता है। यदि वातावरण ठीक नहीं है, तो उसके गुणों का समुचित विकास गलत दिशा में जायेगा। वातावरण का उचित होना वंशानुक्रम के विकास के लिए अनिवार्य शर्त है। अतः व्यक्ति वंशानुक्रम की आधारभूत मान्यताओं को विकसित करने के लिए वातावरण को उपयोगी बनाने में विश्वास रखता है। वातावरण निर्माण की विधियाँ वातावरण निर्माण में अनेक विधियों आती हैं, जो निम्न हैं:-

1. पारिवारिक परिवेश बालकों के वातावरण को उत्तम बनाने के लिए पारिवारिक परिवेश में परिवर्तन की आवश्यकता होती है। पारिवारिक परिवेश में बालक की आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन आवश्यक हो जाता है।

2. परिवेश परविर्तन अच्छे वंशानुक्रम के बालकों को यदि बुरे वातावरण में रखा जायेगा, तो वह खराब हो जायेगा। इसी प्रकार बुरे बालक को अच्छा वातावरण दिये जाने पर उसमें निहित दोष समाप्त हो जाते हैं।
3. स्थायी पारिवारिक सम्बन्ध प्रायः पाश्चात्य देशों में पति-पत्नी के सम्बन्धों में स्थायित्व नहीं आ पाता। तलाक के कारण बालको में कुंठाएं विकसित होने लगती हैंइसलिए भारत की तरह स्थायी पारिवारिक सम्बन्ध अच्छे वातावरण का निर्माण करते हैं।
4. समायोजन के अवसर अच्छा वातावरण समायोजन को आदान-प्रदान करता है। बालक को इस प्रकार की परिस्थितियों में रखा जाना चाहिए। जिससे उन्हें विभिन्न प्रकार की समस्याओं को बाधित करने तथा वातावरण में समायोजन करने के अवसर मिल सके।
5. उत्तम शिक्षा स्वस्थ वातावरण से अभिप्राय है, शिक्षा तथा विकास के अवसर प्राप्त होना। उत्तम शिक्षा के द्वारा ही बालक के वंशानुगुणों में परिवर्तन होता है और उसकी शक्तियों का विकास होता है।
6. पारिवारिक सदस्यों का व्यवहार: बालक को उत्तम वातावरण देने में पारिवारिक सदस्यों का व्यवहार महत्वपूर्ण कारक है। प्रेम, सहयोग, ममता, दया-युक्त व्यवहार से बालक में सद्गुण विकसित होते हैं और ईर्ष्या, द्वेष, घृणायुक्त व्यवहार से व्यक्तित्व में असन्तुलन आता है। माता-पिता को अपने व्यवहार में बालक के प्रति अवस्था तथा उसकी उपयोगिता का सदा ख्याल रखना चाहिए।
7. बालक को समझना: बालक वातावरण में परिवर्तन करने से पूर्व बालक को समझना आवश्यक है। विकास की प्रत्येक अवस्था पर बालक में कुछ विशेषताएं परिलक्षित होती हैं। इन विशेषताओं के आधार पर ही बालक में वातावरण में परिवर्तन किया जा सकता है। बालक की वृद्धि सहज रूप से हो, इसके लिए प्रयत्न करना आवश्यक है। सोरेनसन नेक कहा है कि, शिक्षक के लिए मानव विकास पर वंशानुक्रम और वातावरण के सापेक्षित प्रभाव और आपसी संबंध का ज्ञान विशेष रखता है।

तालिका 2: माता - पिता द्वारा दिए जाने वाले समय के आधार पर विद्यार्थियो का वर्गीकरण।

समय	स्कूल का माध्यम					
	प्राथमिक		मदरसा		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1 घण्टा	80	80.00	60	60.00	140	70.00
2 घण्टा	6	6.00	20	20.00	26	13.00
2 घण्टा से अधिक	8	8.00	5	5.00	13	6.00
नही	6	6.00	15	15.00	21	10.50
योग	100	100.00	100	100.00	200	10.00

Chi square = 14.95, D.F. = 3, $p<0.01$

उपरोक्त तालिका संख्या क 1 में माता पिता द्वारा दिए जाने वाले समय के आधार पर विद्यार्थियो का वर्गीकरण किया गया है। जिसमें 1 घण्टा समय में 80% प्राथमिक एवं मदरसा स्कूल मे 60% है। 2 घण्टा में अभिभावक द्वारा दिए जाने वाले समय प्राथमिक में 6% एवं मदरसा में 20% है। समय न देने वाले में क्रमश प्राथमिक 6% एवं मदरसा 15% है। माता पिता द्वारा दिये जाने वाले समय में सबसे अधिक समय 1 घण्टा का है। 1घण्टा का समय प्राथमिक एवं मदरसा दोनो स्कूल के विद्यार्थियों के माता पिता दे सकते है। माता पिता द्वारा जिनकी संख्या 65% है, समय बच्चो को नही दे पाते है।

पोलिन सियर्स ने (1953) ने पाया कि "वह लड़के जिनके माता पिता प्रेमपूर्ण व्यवहार करते है, वह अपने माता पिता की भूमिकाओ से अधिक तादात्मय स्थापित करते है"

बालक अपने जीवन के प्रतिमानो से अपने माता पिता के व्यवहारो को अपनाने की चेष्ठा करते है, वे अपने माता पिता के प्रेमपूर्ण तथा पुरस्कृत करने वाले जैसे प्रत्यक्षीकरण करते है।

अतः यह स्पष्ट है कि बच्चो के माता पिता दोनो को बच्चो को पूरा – पूरा समय देना चाहिए, जिससे की उनका पूर्ण विकास हो सके।

तालिका 3: टी0वी0 देखने से समय के आधार पर विद्यार्थीयो का वर्गीकरण।

समय	स्कूल का माध्यम					
	प्राथमिक		मदरसा		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1 घण्टा	10	10.00	70	70.00	80	40.00
1½ घण्टा	20	20.00	10	10.00	30	15.00
1½ घण्टा से अधिक	30	30.00	10	10.00	40	20.00
नही	40	40.00	10	10.00	50	25.00
योग	100	100.00	100	100.00	200	100.00

Chi square = 76.33, D.F. = 3, $p<0.01$

तालिका संख्या क 2 के अनुसार टी0वी0 देखने के समय के आधार पर विद्यार्थियो का वर्गीकरण 1 घण्टा से समय में प्राथमिक एवं मदरसा स्कूल के विद्यार्थी 80% अधिक है 1½ घण्टा समय में प्राथमिक एवं मदरसा के विद्यार्थी 30% है 1½ घण्टा से अधिक से समय वालो में प्राथमिक एवं मदरसा के विद्यार्थी 40% है. टी0वी0 न देखने वालो में प्राथमिक एवं मदरसा के 50% विद्यार्थी है। टी0वी0 देखने के आधार पर 1 घण्टा समय मे 80% विद्यार्थी है, जो सबसे अधिक हैं।

तालिका 4: क में खिलौने खरीदने के आधार पर विद्यार्थियो का वर्गीकरण।

खिलौने खरीदने के आधार पर	स्कूल का माध्यम					
	प्राथमिक		मदरसा		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
उम्र के आधार पर	30	30.00	40	40.00	70	35.00
आवश्यकता के आधार पर	10	10.00	20	20.00	30	15.00
बुद्धि के आधार पर	30	30.00	20	20.00	50	25.00
सृजनात्मकता के आधार पर	20	20.00	15	15.00	35	17.50
मालूम नही	10	10.00	5	5.00	15	7.50
योग	100	100.00	100	100.00	200	100.00

Chi square = 9.14, D.F. = 4, not significant

तालिका संख्या 3 क में खिलौने खरीदने के आधार पर विद्यार्थियो का वर्गीकरण किया गया है। सर्वप्रथम उम्र के आधार पर वर्गीकरण है, जिसमे 30% प्राथमिक एवं मदरसा स्कूलों मे 70% एवं आवश्यकता के आधार पर प्राथमिक एवं मदरसा स्कूलो में क्रमशः बुद्धि के आधार पर दोनो विद्यालयों में 50% एवं सृजनात्मकता की दृष्टि से खिलौने लेने के आधार पर प्राथमिक एवं मदरसा स्कूलो में 35% है। कुछ लोग ऐसे भी है, जिन्हे मालूम नही परन्तु खिलौने लेते है। इसके आधार पर प्राथमिक एवं मदरसा स्कूलो में 15% विद्यार्थी है। उम्र के आधार पर 70% विद्यार्थी है, जो सबसे अधिक है।

निष्कर्ष

अध्ययन के अनुसार बच्चो का टी0वी0 देखने का समय 1 से 1½ घण्टा अवश्य देते है चाहे वे मदरसा स्कूल के बच्चे हो या प्राथमिक स्कूल के हो। परन्तु 50% छात्र टी0 वी0 नही देखते है। जिसमे 40% प्राथमिक व 10% मदरसा स्कूल के छात्र है।

वर्तमान अध्ययन मे माता पिता द्वारा बच्चो को खिलौने दिए जाते है। सबसे ज्यादा खिलौने बच्चो को उम्र के अनुसार दिये जाते है। प्राथमिक स्कूल के 30% एवं मदरसा 40% दिए जाते है। आवश्यकता के आधार पर भी खिलौने दिए जाते है बुद्धि का आवश्यकता के आधार पर भी खिलौने दिए जाते है। बुद्धि का सृजनात्मक दृष्टि से भी प्राथमिक स्कूल मे 30%, 20% एवं मदरसा स्कूल मे 20% एवं 50% विद्यार्थी है। सृजनात्मक दृष्टि से किसी – किसी विद्यालयो के बच्चो के माता पिता खिलौना नही देते है कुछ माता – पिता ऐसे ही बिना किसी उद्देश्य के खिलौने दे देते है।

संदर्भ

1. Bernstein AC. How children learn about sex and birth. Psychology Today. 1976;9(8):31-35, 66.

2. Buck R. Non-verbal communication of affect in children. Journal of Personality & Social Psychology. 1975;31:644-653.
3. Peautsch F. Observational and sociometric measures of peer popularity and their relationship to egocentric communication in female preschoolers. Developmental Psychology. 1974;10:745-747.
4. Fogat BI, Litman I. Stability of sex roles and play interests from preschool to elementary school. Journal of Psychology. 1975;89:285-292.
5. Ford FR, Herrick J. Family rules, family lifestyle. American Journal of Orthopsychiatry. 1974;44:61-69. p. 208.
6. Haskett CJ. The exploratory nature of children's social relations. Merrill-Palmer Quarterly. 1977;23:101-113.
7. Jennige KB. People versus object orientation: Social behavior and intellectual activities in preschool children. Developmental Psychology. 1975;11:511-519.
8. Moerk EL. Piaget's research as applied to the explanation of language development. Merrill-Palmer Quarterly. 1975;21:151-169.
9. Rulin KH, Raioni TL. Play preference and its relationship to egocentric popularity and classification skills in preschools. Merrill Quarterly. 1975:171-179.
10. Vincent-Smeth LD Bricker, W Bricker. Acquisition of receptive vocabulary in the toddler-age child. Development. 1975;45:189-193.
11. Yarrow MR, Waxley CZ. Dimensions and correlates of prosocial behavior in young children. Child Development. 1976;47:118-125. p. 209.
12. Huitt W. A Transactional model of the teaching/learning process. Educational Psychology Interactive, Waldasta, G.A.: Valdosta State University; 2003. Retrieved from http://chiron.valdosta.edu/whuitt/materials/tchlrnndhtms (A Transactional Model of the Teaching/Learning Process).
13. Anderson L, Block J. Mastery learning. In: Treffinger D, Davis J, Pipple R, editors. Handbook on Teaching Educational Psychology. New York: Academic Press; 1977.
14. Ashton P. Teacher efficacy: A motivational paradigm for affective teacher education. Journal of Teacher Education. 1984;35(5):28-32.
15. Bloom B. Mastery learning. New York: Holt, Rinehart & Winston, Inc.; 1971.
16. Campbell F, et al. Parental beliefs and values related to family risk, educational intervention, and child academic competence. Early Childhood Research Quarterly. 1991;6(2):167-182. p. 211.
17. Coleman J, Campbell E, Holeson C, McPartlenad J, Mood A, Weinfield F, York R. Equality of Educational Opportunity. Washington, D.C.: U.S. Departmental of Health, Education and Welfare Office of Education; 1966.
18. Cruickshank D. Profile of an effective teacher. Educational Horizons. 1985 Winter;90-92.
19. Gallup G. The seventh annual Gallup pole of public attitudes towards public schools. Phi Delta Kappan. 1980 Dec;57:227-241.
20. Gallup G. The twelfth annual Gallup pole of public attitudes towards public schools. Phi Delta Kappan. 1980 Sep;62:39.
21. Grene J. High School graduation rates in the United States (Rev.). Washington, DC: Block Alliance for Education Options; 2002. Retrieved December 2002, from http://www.manhattoninstitute.org/html/crbaeoh.htm#03.
22. Huitt W. Success in the information age. A paradigm shift. Background paper developed for workshop presentation at the Georgia Independent School Association, Atlanta, Georgia; 1995. Retrieved September 1997 from http://chiron.valdosta.edu/whuitt/col/context/inlarge.htms.
23. Huitt W. Implementing effective school achievement reform: Four Principles. Paper presented at the School Counseling Summit, Valdosta State University, Valdosta, GA; c1999. Retrieved May 2003, from http://chiron.valdosta.edu/whuitt/files/schoolreform.html.
24. Hum Mel J, Huitt W. What you measure is what you get. Ga A S C D Newsletter: The Reporter. 1994 Feb;10-11.
25. Hunter N. Enhancing teaching. Upper Saddle River, NJ: Pearson Education; c1994.